अध्याय 2

भारतीय अर्थव्यवस्था 1950–1990

पंचवर्षीय योजना–

स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय नेताओं द्वारा ऐसे आर्थिक तंत्र को स्वीकार किया गया जो कुछ लोगों की बजाए सबके हितों को प्रोत्साहित करें और बेहतर बनाए।स्वतंत्र भारत के नेताओं ने देखा कि पूरे विश्व में दो प्रकार के आर्थिक तंत्र – समाजवाद और पूँजीवाद व्याप्त है। उन्होंने पूँजीवाद और समाज दोनों के सर्वश्रेष्ठ लक्षणों को समाहित कर एक नया आर्थिक तंत्र–मिश्रित अर्थव्यवस्था विकसित किया।

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 1950 में योजना आयोजन का गठन हुआ जिसके माध्यम से सरकार अर्थव्यवस्था के लिए योजना का निर्माण करती है तथा निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करती है। योजना आयोग के गठन के साथ ही भारत में पंचवर्षीय योजना का युग प्रारंभ हुआ।

पंचवर्षीय योजना के सामान्य उद्देयश –

प्रत्येक पंचवर्षीय योजना के लिए कुछ विशेष रणनीति तथा लक्ष्य होते हैं जिन्हें पूरा करना होता है। पंचवर्षीय योजनाओं के लक्ष्य निम्न हैः

1. आधुनिकीकरण दृष्टिकोण में परिवर्तन
2. आत्मनिर्भरता
3. आर्थिक संवृद्धि
4. समानता

संवृद्धि – संवृद्धि से तात्पर्य देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि से है जैसे कि देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं में वृद्धि। अर्थात् उत्पादक पूँजी या सहायक सेवाओं जैसे परिवहन और बैंकिंग सेवाओं का वृहर स्टाक या उत्पादक पूँजी और सेवाओं की क्षमता में वृद्धि। सकल घरेलू उत्पाद किसी राष्ट्र की आर्थिक संवृद्धि का अच्छा संकेतक है। GDP एक वर्ष में उत्पादित कुल वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य को कहते हैं। इसे चाकलेट या केक की टूकड़े के उदाहरण से समझ सकते है कि जैसे–जैसे चाकलेट या केक का साइन बढ़ता जायेगा और अधिक लोग इसका आनन्द ले सकेगे। प्रथम पंचवर्षीय योजना के शब्दों में अगर भारत के लोगो का जीवन और बेहतर और समृद्ध बनाना है तो वस्तुओं और सेवाओं को अधिक उत्पादन आवश्यक है।

https://www.evidyarthi.in

GDP में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र, कृषि सेवा और औद्योगिक क्षेत्र को शामिल किया जाता है। अर्थव्यवस्था की संरचना में ये उपरोक्त तीन क्षेत्र सम्मिलित है। अलग–अलग राष्ट्रों में अलग–अलग क्षेत्रों का अलग योगदान होता है कुछ में सेवा क्षेत्र और कुछ में कृषि क्षेत्र सर्वाधिक योगदान करता है।

आधुनिकरण – वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि के लिए उत्पादको द्वारा नयी तकनीकी को स्वीकार किया जाता है। नयी तकनीकका प्रयोग ही आधुनिकीकरण है। जैसे कि फसल उत्पादन में वृद्धि के लिए पुरानी बीजों के बजाय नयी उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग इसका अर्थ केवल नयी तकनीक के प्रयोग से ही नहीं जुड़ा है बल्कि राष्ट्र की वैचारिक और सामाजिक मनोस्थिति में परिवर्तन भी है जैसे महिलाओं को समान अधिकार दिया जाना। परम्परागत समाज में औरत केवल घरेलू कार्य करती थी जबकि आधुनिक समाज में उन्हें अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर प्राप्त है। आधुनिकीकरण समाज को सभ्य और सम्पन्न बनाता है।

आत्म निर्भरता – राष्ट्र की आर्थिक संवृद्धि और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करने के दो रास्ते है –

1. अन्य राष्ट्रों से आपातित संसाधनों का उपयोग
2. स्वयं के साधनों का उपयाग

प्रथम सात पंचवर्षीय योजनाओं में आत्म निर्भरता पर अधिक बल दिया गया और अन्य राष्ट्रों से ऐसी वस्तुओं और सेवाओं जिनका स्वयं उत्पादन हो सकता है उनका आयात हतोत्साहित किया गया। इस नीति में मुख्यतः खाद्यान उत्पादन में हमारी अन्य राष्ट्रों पर निर्भरता को कम किया। और यह आवश्यक थी। एक नये स्वतंत्र देश के लिए आत्मनिर्भरता आवश्यक होती है क्योंकि इस बात का भय रहता है कि अन्य राष्ट्रों पर हमारी निर्भरता हमारी सम्प्रभुता को प्रभावित कर सकती है।

समानता – समानता के अभाव में उपरोक्त तीनों उद्देश्य अपने आप में किसी राष्ट्र के लोगों के जीवनस्तर में वृद्धि करने सक्षम नही है। यदि आधुनिकरीकरण संवृद्धि और आत्मनिर्भरता राष्ट्र के गरीब तबके तक नहीं पहुचती है तो आर्थिक संवृद्धि का लाभ केवल धनी व्यक्तियों को ही प्राप्त होगा। अतः संवृद्धि आत्मनिर्भरता और आधुनिकीरण में भागीदारी के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय को उसकी प्राथमिक आवश्यकतायें जैसे कि भोजन, आवास, कपड़ा, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधा प्राप्त हो। जिससे कि आर्थिक सम्पन्नता और सम्पत्ति के वितरण में असमानता में कमी आये।

कृषि – सन् 1951 में देश की राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का अंशदान 59 प्रतिशत था।

https://www.evidyarthi.in

भारत की लगभग तीन–चौथाई जनसंख्या के लिए कृषि ही आजीविका का साधन थी। औपनिवेशिक शासन काल में कृषि क्षेत्र में न तो संवृद्धि हुई और न ही समता रह गई। अतः नियोजकों ने कृषि क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

कृषि की भूमिका –

1. राष्ट्रीय आय में हिस्सा
2. रोजगार में हिस्सा
3. औद्योगिक विकास के लिए आधार
4. विदेशी व्यापार की महता
5. घरेलु उपभोग में महता

भारतीय कृषि की समस्याएँ

भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित है –

भारतीय कृषि की समस्याएँ

(A) सामाजिक समस्याएँ	(B) संस्थागत समस्याएँ	(C) तकनीकी समस्याएँ
1. सामाजिक वातावरण	1. सुधार की दोषपूर्ण प्रवृत्ति	1. उत्पादन की अप्रचलित तकनीक
2. भूमि पर जनसंख्या का दबाव	2. साख व बाज़ार	2. सिंचाई सुविधाओं का अभाव
3. निर्वाहित कृषि	3. साख व बाज़ार सुविधाओं का अभाव	3. फसलों का अनुकरण
4. भूमि का अवक्रमण	4. जोतो का आकार	
5. फसलों का नुकसान		

1950–90 की अवधि के दौरान कृषि नीति ।

कृषि–नीति

भूमि सुधार	**प्रौद्योगिकी सुधार**	**सामान्य सुधार**
1. मध्यस्थों का उन्मूलन	1. HYVs का प्रयोग	1. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार
2. लगान का नियमन	2. रासायनिक खाद का प्रयोग	2. संस्थागत साख का प्रावधान
3. भू–सीमा का निर्धारण	3. कीटनाशकों का प्रयोग में वृद्धि	3. कृषि विपणन व्यवस्था में सुधार
4. जोतो की चकबंदी		4. कृषि मूल्य नीति
5. सहकारी खेती		

हरित क्रान्ति – भारत के संदर्भ में हरित क्रान्ति का तात्पर्य छठे दशक के मध्य में

https://www.evidyarthi.in

कृषि उत्पादन में उस तीव्र वृद्धि से है जो ऊँची उपज वाले बीजों (HYVS) एवं रासायनिक खादों व नई तकनीक के प्रयोग के फलस्वरुप है।

हरित क्रान्ति की दो अवस्थाएँ –

1. प्रथम अवस्था – 60 के दशक के मध्य से 70 के दशक के मध्य तक
2. द्वितीय अवस्था – 70 के दशक के मध्य से 80 के दशक के मध्य तक

हरित क्रान्ति की विशेषताएँ –

1. उच्च पैदावार वाली किस्म के बीज़ों का प्रयोग
2. रासायनिक उर्वरकों का उपयोग
3. सिंचाई व्यवस्था
4. कीटनाशकों का उपयोग

हरित क्रान्ति के प्रभाव –

1. विक्रय अधिशेष की प्राप्ति ।
2. खाद्यान्नो का बफर स्टॉक
3. निम्न आय वर्गो का लाभ

हरित क्रान्ति की सीमाएँ –

1. खाद्य फसलों तक सीमित
2. सीमित क्षेत्र
3. किसानों में असमानता

किसानों को आर्थिक सहायता – कृषि सब्सिडी से तात्पर्य किसानों को मिलने वाली सहायता से है। दूसरे शब्दों में बाजार दर से कम दर पर किसानों को कुछ आगतों की पूर्ति करना।

पक्ष में तर्क–

https://www.evidyarthi.in

1. भारत में अधिकांश किसान गरीब है। सब्सिडी के बिना वे आवश्यक आगते नहीं खरीद पायेगें।
2. आर्थिक सहायता को समाप्त कर देने पर अमीर व गरीब किसानों के मध्य असमानता बढ जाएगी।

विपक्ष में तर्क –

1. उच्च पैदावार देने वाली तकनीक का मुख्य रुप से बड़े किसानों को ही लाभ मिला। अतः अब कृषि सब्सिडी नहीं दी जानी चाहिए।
2. एक सीमा के बाद, आर्थिक सहायता, संसाधनों के व्यर्थ उपयोग को बढ़ावा देती है।

उद्योग का महत्व –

1. रोजगार सृजन
2. कृषि का विकास
3. प्रकृतिक संसाधनों का उपयोग
4. श्रम की अधिक उत्पादकता
5. संवृद्धि के लिए अधिक क्षमता
6. निर्यात की अधिक मात्रा की कूंजी
7. आत्मनिर्भर विकास को उन्नत करता है।
8. क्षेत्रीय संतुलन को बढ़ाता है।

औद्योगिक नीति 1956 –

विशेषताएँ –

1. उद्योगों का तीन श्रेणियों में वर्गीकरण ।

   (A) प्रथम श्रेणी में वे 17 उद्योग रखे गए जिनकी स्थापना व विकास केवल सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के रुप में किया जाएगा।

   (B) इस श्रेणी में वे 12 उद्योग रखे गए जिनकी स्थापना निजी व सार्वजनिक क्षेत्रों में की जाएगी किन्तु निजी क्षेत्र केवल गौण भूमिका निभाएगा।

   (C) उपरोक्त (i) और (ii) श्रेणी के उद्योगों के अतिरिक्त अन्य सभी उद्योगों की निजी क्षेत्र के लिए छोड़ दिया गया।

https://www.evidyarthi.in

2. औद्योगिक लाइसेंसिंग – निजी क्षेत्र में उद्योगों को स्थापित करने के लिए सरकार से लाइसेंस लेना आवश्यक बना दिया।
3. लघु उद्योगों का विकास।
4. औद्योगिक शांति में कमी।
5. तकनीकी शिक्षा व प्रशिक्षण

सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका –

1. मजबूत औद्योगिक आधार का सृजन ।
2. आधारभूत ढाँचे का विकास।
3. पिछड़े क्षेत्रों का विकास।
4. बचतों को गतिशील बनाना व विदेशी विनिमय के लिए।
5. आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण को रोकने के लिए।
6. आय व धन के वितरण में समानता बढ़ाने के लिए।
7. रोजगार प्रदान करने के लिए।
8. आयात प्रतिस्थापन को बढ़ावा देने के लिए।

लघुस्तरीय उद्योग –

लघुस्तरीय उद्योगो की भूमिका –

1. श्रम प्रधान तकनीक
2. स्व–रोजगार
3. कम पूँजी प्रधान
4. निर्यात का बढ़ावा
5. आय का समान वितरण
6. उद्योगों का विकेन्द्रीकण
7. बड़े स्तर के उद्योगों के लिए आधार
8. कृषि का विकास

लघुस्तरीय उद्योगों की समस्याएँ –

1. वित्त की समस्याएँ

https://www.evidyarthi.in

2. कच्चे माल की समस्याएँ
3. बाज़ार की समस्याएँ
4. अप्रचलित मशीन व संयंत्र
5. निर्यात क्षमता का अल्पप्रयोग
6. तानाशाही बाधाए
7. बड़े स्तरीय उद्योगों से प्रतियोगिता

व्यापार नीति : आयात प्रतिस्थापन

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने आयात प्रतिस्थापन की नीति को अपनाया, जिसे अंतर्मुखी व्यापार नीति कहा जाता है। आयात प्रतिस्थापन्न से अभिप्राय घरेलू उत्पादन से आयातों को प्रतिस्थापित करने की नीति से है। सरकार ने दो तरीकों से भारत में उत्पादित वस्तुओं को आयात से संरक्षण दिया गया –

1. प्रशुल्क – आयातित वस्तुओं पर लगाए जाने वाले कर।
2. कोटा – इसका अभिप्राय घरेलु उत्पादक द्वारा एक वस्तु की आयात की जा सकने वाली अधिकतम सीमा को तय करने से होता है।

आयात प्रतिस्थापन के कारण –

1. भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों के उद्योग इस स्थिति में नही है वे अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं में उत्पादित वस्तुओं से प्रतियोगिता कर सके।
2. महत्वपूर्ण वस्तुओं के आयात के लिए विदेशी मुद्रा बचाना।

1 अंक वले प्रश्न –

1. हरित क्रांतिसे क्या तात्पर्य है ?
2. बाजार आधिक्य का क्या अर्थ है ?
3. लघु–स्तरीय उद्योग का क्या अर्थ है ?
4. आर्थिक सहायता क्या है ?
5. HYV बीज़ क्या होते हैं ?
6. भारत में हरित क्रान्ति का आगमन कब हुआ ?
7. 1951 में देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का प्रतिशत योगदान कितना था?
8. भारत में दूसरी औद्योगिक नीति कब घोषित की गई ?

https://www.evidyarthi.in

9. सन् 1956 की औद्योगिक नीति में उद्योगों को कितनी श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया ?

10. भारत मे हरित क्रान्ति किन फसलों में सफल रही –

a) गेहूँ व चावल
b) गेहूँ व आलू
c) चावल व कॉफी
d) चावल व चाय

11. योजना आयोग का नया नाम क्या है ?

3/4 अंक के प्रश्न–

1. हरित क्रांति की तीन कमियाँ का वर्णन कीजिए ?
2. रोजगार सृजन में लघु उद्योगों की भूमिका को समझाइए ?
3. भारत में लघु उद्योगों को संरक्षण क्यों प्रदान किया और इसके लिए क्या प्रयास किए ?
4. भारत सरकार ने लघु उद्योगों को संरक्षण क्यों प्रदान किया और इसके लिए क्या प्रयास किए ?
5. औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956 के अन्तर्गत उद्योगों को कितने भागों में वर्गीकृत किया गया ? व्याख्या कीजिए?
6. हरित क्रांति क्या है और इससे किसानों को क्या लाभ हुआ ?
7. भारतीय कृषि की तीन समस्याओं का वर्णन कीजिए ?
8. योजना के संवृद्धि लक्ष्य को स्पष्ट कीजिए ?

छः अंक वाले प्रश्न –

1. 1950 से 1990 के दौरान कृषि के विकास की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए?
2. 1956 की औद्योगिक नीति की मुख्य विशेषताएँ बताइए ?
3. लघु उद्योगों की समस्याओं का वर्णन कीजिए ?
4. योजना आयोग के चारों प्रमुख लक्ष्यों का संक्षेप में वर्णन करें ?

HOTS

1. आर्थिक सहायता सरकार के वित्त पर भारी बोझ डालती है, परन्तु गरीब और सीमान्त किसानों के लिए आवश्यक है। समझाइए।
2. समझाकर आयात प्रतिस्थापन्न किस प्रकार घरेलु उद्योगों को संरक्षण प्रदान करता है ?

https://www.evidyarthi.in

एक अंक वाले प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. हरित क्रांति से तात्पर्य छठे दशक के मध्य में कृषि उत्पादन में उस तीव्र वृद्धि से है, जो ऊँची उपज वाले बीजों एवं रासायनिक खादों व नई तकनीक के प्रयोग के फलस्वरुप है।

उत्तर 2. किसानों के पास स्व उपभोग से अधिक उत्पादन जिसे वे बाजार में बेचने के लिए जाते हैं।

उत्तर 3. वे उद्योग जिनमें केवल 5 करोड़ रुपये तक का निवेश किया गया हो।

उत्तर 4. सरकार द्वारा उत्पादकों को दी गई सहायता जिससे कि वे अपनी वस्तु को बाजार कीमत से कम दर पर बेच सकें।

उत्तर 5. ऊँची उपज वाले बीजों को HYVs बीज कहा जाता है।

उत्तर 6. 1960 के दशक में

उत्तर 7. 52%

उत्तर 8. 1956 में

उत्तर 9. तीन श्रेणियों में

उत्तर 10.(a)

उत्तर 11. नीति आयोग

पुनरावृत्ति प्रश्न

भारतीय अर्थव्यवस्था 1950–1990

1. भारत में योजनाएं कौन लागू करता है? संकेत योजना आयोग। 1

2. हरित क्रांन्ति की क्या सीमाएं थी ? 3/4

संकेत –

1. सीमित फसलों व क्षेत्रों तक सीमित
2. गरीबी में आंशिक कमी
3. पारिस्थितिक अवमूल्यन
4. छोटे किसानों को लाभ नहीं।

3. भारत में पंचवर्षीय योजनाओं की उपलब्धियाँ तथा असफलताएँ बतायें। 6

https://www.evidyarthi.in

संकेत –

उपलब्धियाँ

1. उद्योगों में विविधता
2. खाद्य उत्पादन में निर्भरता
3. राष्ट्रीय तथा प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि
4. विचोलियों का अंत (भू–सुधार)

असफलताएँ

1. रोजगार रहित संवृद्धि
2. क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि
3. व्यावसायिक संरचना में बदलाव नहीं
4. प्रभावशाली नियति क्षेत्र की असफलता
5. प्रभावशाली नियति क्षेत्र की कमी

1991 की आर्थिक–सुधार

स्वतंत्र भारत में समाजवादी तथा पूँजीवादी अर्थव्यव्यवस्था के गुणों को सम्मिलित करते हुए मिश्रित आर्थिक ढांचे को स्वीकार किया गया । भारतीय अर्थव्यव्यवस्था की अक्षम प्रबंधन ने 1980 के दशक तक वित्तीय संकट उत्पन्न कर दिया। सरकारी नीतियों और प्रशासन के क्रियान्वयन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र तथा टैक्स (कर) सरकार के आय के स्रोत हैं। भारत में 1991 से भारत सरकार द्वारा कई आर्थिक सुधार किए गए।

https://www.evidyarthi.in